इकाई-III

9. ग्राम श्री

रचनाकार

सुमित्रानंदन पंत का जन्म उत्तरांचल के अल्मोड़ा जिले के कौसानी गाँव में सन् 1900 में हुआ। उनकी शिक्षा बनारस और इलाहाबाद में हुई। आज़ादी के आंदोलन के दौरान महात्मा गांधी के आह्वान पर उन्होंने कालेज छोड़ दिया। छायावादी कविता के प्रमुख स्तंभ रहे सुमित्रानंदन पंत का काव्य-क्षितिज 1916 से 1977 तक फैला है। सन् 1977 में उनका देहावसान हो गया।

वे अपनी जीवन दृष्टि के विभिन्न चरणों में छायावाद, प्रगतिवाद एवं अरविंद दर्शन से प्रभावित हुए। **वीणा, ग्रंथि, गुंजन, ग्राम्या, पल्लव, युगांत, स्वर्ण किरण, स्वर्णधूलि, कला और बूढ़ा चाँद, लोकायतन, चिदंबरा** आदि उनकी प्रमुख काव्य-कृतियाँ हैं। उन्हें साहित्य अकादमी, भारतीय ज्ञानपीठ एवं सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

पंत की कविता में प्रकृति और मनुष्य के अंतरंग संबंधों की पहचान है। उन्होंने आधुनिक हिंदी कविता को एक नवीन अभिव्यंजना पद्धति एवं काव्यभाषा से समृद्ध किया। भावों की अभिव्यक्ति के लिए सटीक शब्दों के चयन के कारण उन्हें शब्द शिल्पी कवि कहा जाता है।

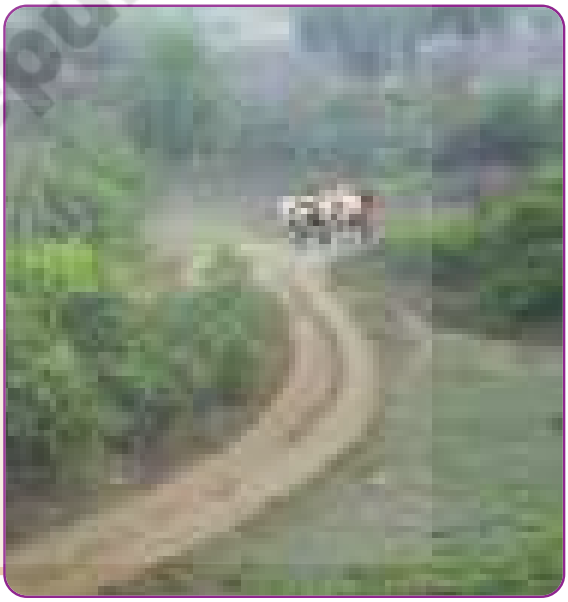

प्रस्तावना प्रसंग

ओ शहर की भीड़ अब मुझे क्षमा दो,
लौटकर मैं गाँव जाना चाहता हूँ।
गाँव की वह धूल जो भूली नहीं है,
फिर उसे माथे लगाना चाहता हूँ।
– राम अवतार त्यागी

प्रश्न

1. आजकल शहर की ज़िंदगी कैसी है?
2. गाँव और शहर के रहन-सहन में क्या अंतर है?
3. कवि गाँव की धूल माथे पर क्यों लगाना चाहता है?

भूमिका

ग्राम श्री कविता में पंत ने गाँव की प्राकृतिक सुषमा और समृद्धि का मनोहारी वर्णन किया है। खेतों में दूर तक फैली लहलहाती फसलें, फल-फूलों से लदी पेड़ों की डालियाँ और गंगा की सुंदर रेती कवि को रोमांचित करती है। उसी रोमांच की अभिव्यक्ति है यह कविता।

© SCERT not to be republished

फैली खेतों में दूर तलक
मखमल की कोमल हरियाली,
लिपटीं जिससे रवि की किरणें
चाँदी की सी उजली जाली!
तिनकों के हरे हरे तन पर
हिल हरित रुधिर है रहा झलक,
श्यामल भू तल पर झुका हुआ
नभ का चिर निर्मल नील फलक!

रोमांचित सी लगती वसुधा
आई जौ गेहूँ में बाली,
अरहर सनई की सोने की
किंकिणियाँ हैं शोभाशाली!
उड़ती भीनी तैलाक्त गंध
फूली सरसों पीली पीली,
लो, हरित धरा से झाँक रही
नीलम का कलि, तीसी नीली!
रंग रंग के फूलों में रिलमिल
हँस रही सखियाँ मटर खड़ी
मखमली पेटियों सी लटकीं
छीमियाँ, छिपाए बीज लड़ी!
फिरती है रंग रंग की तितली
रंग रंग के फूलों पर सुंदर,
फूले फिरते हैं फूल स्वयं
उड़ उड़ वृंतों से वृंतो पर!

अब रजत स्वर्ण मंजरियों से
लद गई आम्र तरु की डाली,
झर रहे ढाक, पीपल के दल,
हो उठी कोकिला मतवाली!

© NCERT not to be republished

महके कटहल, मुकुलित जामुन,
जंगल में झरबेरी झूली,
फूले आड़ू, नींबू, दाड़िम,
आलू, गोभी, बैंगन, मूली!
पीले मीठे अमरूदों में
अब लाल लाल चित्तियाँ पड़ी,
पक गए सुनहले मधुर बेर,
अँवली से तरु की डाल जड़ी!
लहलह पालक, महमह धनिया,
लौकी औ' सेम फलीं, फैलीं
मखमली टमाटर हुए लाल,
मिरचों की बड़ी हरी थैली!

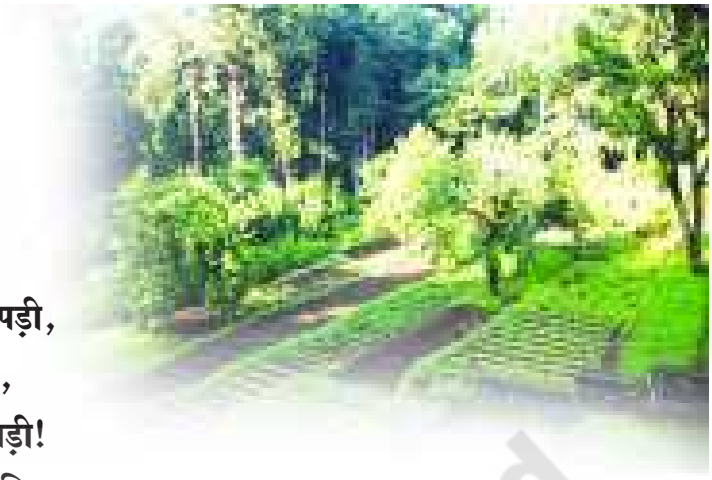

बालू के साँपों से अंकित
गंगा की सतरंगी रेती
सुंदर लगती सरपत छाई
तट पर तरबूज़ों की खेती
अँगुली की कंघी से बगुले
कलँगी सँवारते हैं कोई,
तिरते जल में सुरखाब, पुलिन पर
मगरौठी रहती सोई!

हँसमुख हरियाली हिम-आतप
सुख से अलसाए-से सोए,
भीगी अँधियाली में निशि की
तारक स्वप्नों में-से खोए-
मरकत डिब्बे सा खुला ग्राम-
जिस पर नीलम नभ आच्छादन-
निरुपम हिमांत में स्निग्ध शांत
निज शोभा से हरता जन मन!

© SCERT not to be republished

प्रश्न-अभ्यास

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

❖ विचार-विमर्श

1. अपने द्वारा की गई किसी यात्रा के बारे में बताइए।
2. शहरों के पर्यावरण में प्रदूषण की मात्रा काफ़ी बढ़ चुकी है। गाँव और शहर के पर्यावरण की तुलना करते हुए चर्चा कीजिए।

❖ पढ़ना, भाव समझना और भाव विस्तार

क. पाठ में उत्तर ढूँढ़िए।

1. हरियाली की कौन-कौन सी विशेषताएँ बताई गई हैं?
2. गाँव की कौनसी शोभा जन-मन को हर रही हैं?
3. निम्नलिखित भाव प्रकट करनेवाली कविता की पंक्तियाँ लिखिए।
   क. हरियाली की विशेषता
   ख. फलों-तरकारियों के खेतों का वर्णन
4. वसंत ऋतु में प्रकृति के बदलाव को दर्शानेवाली पंक्तियाँ रेखांकित कीजिए।

ख. पाठ समझकर उत्तर दीजिए।

1. कवि ने गाँव को हरता जन-मन क्यों कहा?
2. गाँव की तुलना मरकत डिब्बे से क्यों की गई?
3. आशय स्पष्ट कीजिए।
   क. हिल हरित रुधिर है रहा झलक
   ख. बालू के साँपों से अंकित
   गंगा की सतरंगी रेती
   ग. हँसमुख हरियाली हिम आतप
   सुख से अलसाए सोए
4. कविता में किस मौसम के सौंदर्य का वर्णन है? उदाहरणसहित बताइए।
5. अरहर और सनई के खेत कवि को कैसे दिखाई देते हैं?

ग. पढ़ने की योग्यता का विस्तार

कविता पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

सोने का संसार।
उषा छिप गई नभस्थली में, देकर यह उपहार।

© SCERT not to be republished

लघु-लघु कलियाँ भी प्रभात में, होती हैं साकार।
प्रात समीरण कर देता है, नवजीवन संचार।
लोल-लोल लहलही लताएँ, स्वर्णमयी सुकुमार।
झुकी जा रही हैं ले तन में, नव यौवन का भार।
भ्रमर छूटकर पंकज दल से, करने लगे विहार।

-गोपाल शरण सिंह

1. **हमें प्रातः समय सोने का संसार कौन देता है?**

   क. रात ख. संध्या ग. उषा घ. सूर्य

2. **'प्रात समीरण' क्या करता है?**

   क. नये जीवन का संचार करता है। ख. ज्ञानोदय करता है।

   ग. सुख देता है। घ. रात का स्मरण कराता है।

3. **लताएँ क्यों झुक जाती हैं?**

   क. नवयौवन के भार से ख. हवाओं के चलने से

   ग. विनम्रता से घ. फल-फूलों के भार से

4. **उषाकाल में भ्रमर क्या कर रहा है?**

   क. नवजीवन संचार ख. मंजुल वंदनवार

   ख. विहार ग. गीतों का गायन

अभिव्यक्ति और सृजनात्मकता

❖ स्वाभिव्यक्ति

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. आपको कौन सी ऋतु पसंद है? क्यों?
2. इस कविता में जिस गाँव का चित्रण हुआ है, वह भारत के किस क्षेत्र से संबंधित हो सकता है? अपने उत्तर का कारण बताइए।
3. कुछ लोग खुले प्राकृतिक वातावरण में काम करते हैं, तो कुछ वातानुकूलित कार्यालयों में। आप अपने भावी जीवन में कहाँ काम करना पसंद करेंगे? कारणसहित बताइए।
4. क्या नदियों, झीलों, फूलों आदि प्राकृतिक तत्वों को देखकर कभी तुम्हारा मन उल्लसित हुआ है? क्या सबको आप जैसी ही अनुभूति होती होगी? अपने विचार लिखिए।

ख. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ-दस वाक्यों में लिखिए।

1. भाव और भाषा की दृष्टि से आपको यह कविता कैसी लगी? उसे अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।

© SCERT not to be republished

2. पंतजी प्रकृति वर्णन के बेजोड़ कवि माने जाते हैं। कविता के आधार पर इसकी पुष्टि कीजिए।

❖ सृजनात्मक कार्य

आप जहाँ रहते हैं उस इलाके के किसी मौसम विशेष के सौंदर्य को कविता या गद्य में वर्णन कीजिए।

❖ प्रशंसा

भारत गाँवों का देश है। जनगणना–2011 के अनुसार लगभग सत्तर प्रतिशत लोग गाँवों में रहते हैं। गाँव का वातावरण स्वच्छ एवं सुंदर होता है। फिर भी आज गाँवों से शहरों की ओर पलायन देश के लिए समस्या बनती जा रही है। इसके रोकथाम के लिए सुझाव दीजिए।

भाषा की बात

1. पाठ से ढूँढ़कर लिखिए।
   क. अनाजों के नाम
   ख. फलों के नाम
   ग. रंगों के नाम
2. इस कविता पाठ में **हिमांत** शब्द मूलतः हिम + अंत से मिलकर बना है। इसी प्रकार निर्मल निः + मल से बना है। दो निर्दिष्ट अक्षरों के पास आने के कारण इनके मेल से जो विकार होता है उसे संधि कहते हैं। संधि से बने शब्दों के पाँच उदाहरण दीजिए।

परियोजना कार्य

ग्रामीण उत्थान के लिए कार्य करनेवाले किसी एक समाजसेवी के बारे में जानकारी प्राप्त करके लिखिए।

© SCERT not to be republished

इकाई-III

10. साँवले सपनों की याद

रचनाकार जाबिर हुसैन का जन्म सन् 1945 में गाँव नौनहीं राजगिर, जिला नालंदा, बिहार में हुआ। अंग्रेज़ी भाषा एवं साहित्य के प्राध्यापक रहे। सक्रिय राजनीति में भाग लेते हुए 1977 में मुंगेर से बिहार विधानसभा से सदस्य निर्वाचित हुए और मंत्री बने। वे बिहार विधान परिषद के सभापति भी रह चुके हैं।

जाबिर हुसैन हिंदी, उर्दू तथा अंग्रेज़ी-तीनों भाषाओं में समान अधिकार के साथ लेखन करते रहे हैं। उनकी हिंदी रचनाओं में **जो आगे हैं, डोला बीबी का मज़ार, अतीत का चेहरा, लोगां, एक नदी रेत भरी** प्रमुख हैं।

अपने लंबे राजनैतिक-सामाजिक जीवन के अनुभवों में उपस्थित आम आदमी के संघर्षों को उन्होंने अपने साहित्य में प्रकट किया है। संघर्षरत आम आदमी और विशिष्ट व्यक्तित्वों पर लिखी गई उनकी डायरियाँ चर्चित-प्रशंसित हुई हैं। जाबिर हुसैन ने डायरी विधा में एक अभिनव प्रयोग किया है जो अपनी प्रस्तुति, शैली और शिल्प में नवीन है।

प्रस्तावना प्रसंग

पीपल की ऊँची डाल पर
बैठी चिड़िया गाती है।
तुम्हें ज्ञात अपनी बोली में
क्या संदेश सुनाती है?
उसके मन में लोभ नहीं है,
पाप नहीं परवाह नहीं।
जग का सारा माल हड़प कर
जीने की भी चाह नहीं।

–आरती प्रसाद

प्रश्न

1. कल्पना कीजिए कि पशु-पक्षी इन्सानों के बारे में क्या सोचते होंगे?
2. पक्षियों को लोभ क्यों नहीं होता?
3. हम प्रकृति का आनंद किस प्रकार उठा सकते हैं?

भूमिका

प्रस्तुत पाठ जून 1987 में प्रसिद्ध पक्षी विज्ञानी सालिम अली की मृत्यु के तुरंत बाद डायरी शैली में लिखा गया संस्मरण है। सालिम अली की मृत्यु से उत्पन्न दुख और अवसाद को लेखक ने **साँवले सपनों की याद** के रूप में व्यक्त किया है। सालिम अली का स्मरण करते हुए लेखक ने उनका व्यक्ति-चित्र प्रस्तुत किया है। यहाँ भाषा की रवानी और अभिव्यक्ति की शैली दिल को छूती है ।

© SCERT not to be republished

सुनहरे परिंदों के खूबसूरत पंखों पर सवार साँवले सपनों का एक हुजूम मौत की खामोश वादी की तरफ अग्रसर है। कोई रोक-टोक सके, कहाँ संभव है।

इस हुजूम में आगे-आगे चल रहे हैं, सालिम अली। अपने कंधों पर, सैलानियों की तरह अपने अंतहीन सफ़र का बोझ उठाए। लेकिन यह सफ़र पिछले तमाम सफ़रों से भिन्न है। भीड़-भाड़ की ज़िंदगी और तनाव के माहौल से सालिम अली का यह आखिरी पलायन है। अब तो वो उस वन-पक्षी की तरह प्रकृति में विलीन हो रहे हैं, जो ज़िंदगी का आखिरी गीत गाने के बाद मौत की गोद में जा बसा हो। कोई अपने जिस्म की हरारत और दिल की धड़कन देकर भी उसे लौटाना चाहे तो वह पक्षी अपने सपनों के गीत दोबारा कैसे गा सकेगा!

मुझे नहीं लगता, कोई इस सोए हुए पक्षी को जगाना चाहेगा। वर्षों पूर्व, खुद सालिम अली ने कहा था कि लोग पक्षियों को आदमी की नज़र से देखना चाहते हैं। यह उनकी भूल है, ठीक उसी तरह, जैसे जंगलों और पहाड़ों, झरनों और आबशारों को वो प्रकृति की नज़र से नहीं, आदमी की नज़र से देखने को उत्सुक रहते हैं। भला कोई आदमी अपने कानों से पक्षियों की आवाज़ का मधुर संगीत सुनकर अपने भीतर रोमांच का सोता फूटता महसूस कर सकता है?

एहसास की ऐसी ही एक ऊबड़-खाबड़ ज़मीन पर जन्मे मिथक का नाम है, सालिम अली।

पता नहीं, इतिहास में कब कृष्ण ने वृंदावन में रासलीला रची थी और शोख गोपियों को अपनी शरारतों का निशाना बनाया था। कब माखन भरे भाँड़े फोड़े थे और दूध-छाली से अपने मुँह भरे थे। कब वाटिका में, छोटे-छोटे किंतु घने पेड़ों की छाँह में विश्राम किया था। कब दिल की धड़कनों को एकदम से तेज़ करने वाले अंदाज़ में बंसी बजाई थी। और, पता नहीं, कब वृंदावन की पूरी दुनिया संगीतमय हो गई थी। पता नहीं, यह सब कब हुआ था। लेकिन कोई आज भी वृंदावन जाए तो नदी का साँवला पानी उसे पूरे घटना-क्रम की याद दिला देगा। हर सुबह, सूरज निकलने से पहले, जब पतली गलियों से उत्साह भरी भीड़ नदी की ओर बढ़ती है, तो लगता है जैसे उस भीड़ को चीरकर अचानक कोई सामने आएगा और बंसी की आवाज़ पर सब किसी के कदम थम जाएँगे। हर शाम सूरज ढलने से पहले, जब

© SCERT not to be republished

वाटिका का माली सैलानियों को हिदायत देगा तो लगता है जैसे बस कुछ ही क्षणों में वो कहीं से आ टपकेगा और संगीत का जादू वाटिका के भरे-पूरे माहौल पर छा जाएगा। वृंदावन कभी कृष्ण की बाँसुरी के जादू से खाली हुआ है क्या?

मिथकों की दुनिया में इस सवाल का जवाब तलाश करने से पहले एक नज़र कमज़ोर काया वाले उस व्यक्ति पर डाली जाए जिसे हम सालिम अली के नाम से जानते हैं। उम्र को शती तक पहुँचने में थोड़े ही दिन तो बच रहे थे। संभव है, लंबी यात्राओं की थकान ने उनके शरीर को कमज़ोर कर दिया हो, और कैंसर जैसी जानलेवा बीमारी उनकी मौत का कारण बनी हो। लेकिन अंतिम समय तक मौत उनकी आँखों से वह रोशनी छीनने में सफल नहीं हुई जो पक्षियों की तलाश और उनकी हिफ़ाज़त के प्रति समर्पित थी। सालिम अली की आँखों पर चढ़ी दूरबीन उनकी मौत के बाद ही तो उतरी थी।

उन जैसा 'बर्ड वाचर' शायद ही कोई हुआ हो। लेकिन एकांत क्षणों में सालिम अली बिना दूरबीन भी देखे गए हैं। दूर क्षितिज तक फैली ज़मीन और झुके आसमान को छूने वाली उनकी नज़रों में कुछ-कुछ वैसा ही जादू था, जो प्रकृति को अपने घेरे में बाँध लेता है। सालिम अली उन लोगों में थे जो प्रकृति के प्रभाव में आने के बजाए प्रकृति को अपने प्रभाव में लाने के कायल होते हैं। उनके लिए प्रकृति में हर तरफ एक हँसती-खेलती रहस्य भरी दुनिया पसरी थी। यह दुनिया उन्होंने बड़ी मेहनत से अपने लिए गढ़ी थी। इसके गढ़ने में उनकी जीवन-साथी तहमीना ने काफ़ी मदद पहुँचाई थी। तहमीना स्कूल के दिनों मे उनकी सहपाठी रही थीं।

अपने लंबे रोमांचकारी जीवन में ढेर सारे अनुभवों के मालिक सालिम अली एक दिन केरल की 'साइलेंट वैली' को रेगिस्तानी हवा के झोंकों से बचाने का अनुरोध लेकर चौधरी चरण सिंह से मिले थे। वे प्रधानमंत्री थे। चौधरी साहब गाँव की मिट्टी पर पड़ने वाली पानी की पहली बूँद का असर जानने वाले नेता थे। पर्यावरण के संभावित खतरों का जो चित्र सालिम अली ने उनके सामने रखा, उसने उनकी आँखें नम कर दी थीं।

आज सालिम अली नहीं हैं। चौधरी साहब भी नहीं हैं। कौन बचा है, जो अब सोंधी माटी पर उगी फसलों के बीच एक नए भारत की नींव रखने का संकल्प लेगा? कौन बचा है, जो अब हिमालय और लद्दाख की बरफ़ीली ज़मीनों पर जीने वाले पक्षियों की वकालत करेगा?

© SCERT not to be republished

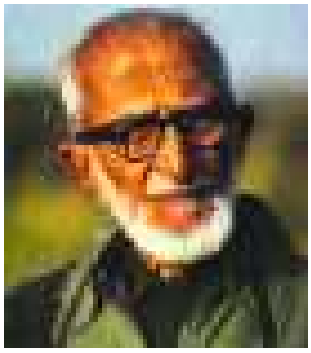

सालिम अली ने अपनी आत्मकथा का नाम रखा था 'फाल ऑफ ए स्पैरो' (Fall of Sparrow) मुझे याद आ गया, डी एच लॉरेंस की मौत के बाद लोगों ने उनकी पत्नी फ्रीडा लॉरेंस से अनुरोध किया कि वह अपने पति के बारे में कुछ लिखें। फ्रीडा चाहती तो ढेर सारी बातें लॉरेंस के बारे में लिख सकती थीं। लेकिन उसने कहा- मेरे लिए लॉरेंस के बारे में कुछ लिखना असंभव-सा है। मुझे महसूस होता है, मेरी छत पर बैठने वाली गोरैया लॉरेंस के बारे में ढेर सारी बातें जानती है। मुझसे भी ज्यादा जानती है। वो सचमुच इतना खुला-खुला और सादा-दिल आदमी था। मुमकिन है, लॉरेंस मेरी रगों में, मेरी हड्डियों में समाया हो। लेकिन मेरे लिए कितना कठिन है, उसके बारे में अपने अनुभवों को शब्दों का जामा पहनाना। मुझे यकीन है, मेरी छत पर बैठी गोरैया उसके बारे में, और हम दोनों ही के बारे में, मुझसे ज़्यादा जानकारी रखती है।

जटिल प्राणियों के लिए सालिम अली हमेशा एक पहेली बने रहेंगे। बचपन के दिनों में, उनकी एयरगन से घायल होकर गिरने वाली, नीले कंठ की वह गोरैया सारी ज़िंदगी उन्हें खोज के नए-नए रास्तों की तरफ ले जाती रही। ज़िंदगी की ऊँचाइयों में उनका विश्वास एक क्षण के लिए भी डिगा नहीं। वो लॉरेंस की तरह नैसर्गिक ज़िंदगी का प्रतिरूप बन गये थे।

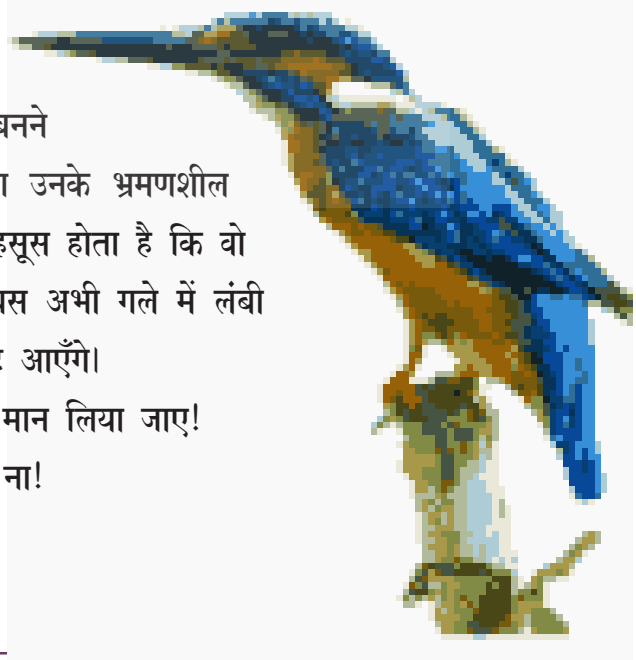

सालिम अली प्रकृति की दुनिया में एक टापू बनने की बजाए अथाह सागर बनकर उभरे थे। जो लोग उनके भ्रमणशील स्वभाव और उनकी यायावरी से परिचित हैं, उन्हें महसूस होता है कि वो आज भी पक्षियों के सुराग में ही निकले हैं, और बस अभी गले में लंबी दूरबीन लटकाए अपने खोजपूर्ण नतीजों के साथ लौट आएँगे।

जब तक वो नहीं लौटते क्या उन्हें गया हुआ मान लिया जाए!

मेरी आँखें नम हैं, सालिम अली, तुम लौटोगे ना!

© NCERT not to be republished

प्रश्न-अभ्यास

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

❖ विचार-विमर्श

1. कोई कुत्ता, बिल्ली अथवा खरगोश तो कोई तोता, कबूतर अथवा मुर्गी पालना पसंद करते हैं? आपको कौनसा पशु या पक्षी पालना पसंद है? और क्यों?
2. पक्षी कीड़े-मकोड़ों को खा जाते हैं, जिससे हमारी फसलें सुरक्षित रहती हैं। इसी प्रकार चर्चा कीजिए कि पक्षी पर्यावरण के संरक्षण में किस प्रकार सहायक हैं?

❖ पढ़ना, भाव समझना और भाव विस्तार

क. पाठ में उत्तर ढूँढ़िए।

1. किस घटना ने सालिम अली के जीवन की दिशा बदल दी और उन्हें पक्षी प्रेमी बना दिया?
2. पाठ पढ़कर उन वाक्यों को रेखांकित कीजिए जिन्हें पर्यावरण के संभावित खतरों को चित्रित करने के लिए सालिम अली ने तत्कालीन प्रधानमंत्री के सामने प्रस्तुत किया।
3. पाठ पढ़िए। सही विकल्प चुनिए।

   i. सालिम अली कौनसे हुजूम में चल रहे हैं?

   क. यात्रियों का हुजूम　　ख. विद्यार्थियों का हुजूम

   ग. साँवले सपनों का हुजूम　　घ. सुनहरे पक्षियों का हुजूम

   ii. भीड़ को चीरकर अचानक कोई सामने आएगा। इस पंक्ति में कोई कौन है?

   क. सालिम अली　　ख. लेखक

   ग. प्रधानमंत्री　　घ. कृष्ण

   iii. सालिम अली को किससे प्यार था?

   क. प्रकृति　　ख. जीवन

   ग. प्राणी　　घ. वनस्पति

   iv. सालिम अली के लिए प्रकृति में हर तरफ कैसी दुनिया पसरी थी?

   क. वैभवपूर्ण दुनिया　　ख. सुनहरी दुनिया

   ग. सौंदर्यपूर्ण दुनिया　　घ. हँसती-खेलती दुनिया

ख. पाठ समझकर उत्तर दीजिए।

1. लेखक ने सालिम अली की मृत्यु के बाद लिखे प्रस्तुत संस्मरण का शीर्षक साँवले सपनों की याद क्यों रखा होगा?

© SCERT not to be republished

2. सालिम अली ने यह क्यों कहा कि लोग पक्षियों को आदमी की नज़र से देखना चाहते हैं?
3. आशय स्पष्ट कीजिए।

   क. वो लारेंस की तरह नैसर्गिक ज़िंदगी का प्रतिरूप बन गए थे।

   ख. कोई अपने जिस्म की हरारत और दिल की धड़कन देकर भी उसे लौटाना चाहे तो वह पक्षी अपने सपनों के गीत दुबारा कैसे गा सकेगा!

   ग. सालिम अली प्रकृति की दुनिया में एक टापू बनने के बजाय अथाह सागर बनकर उभरे थे।
4. सालिम अली के निधन से पूर्व की उनकी परिस्थिति पर लेखक ने किस प्रकार प्रकाश डाला?
5. "मेरी छत पर बैठने वाली गौरैया लारेंस के बारे में ढेर सारी बातें जानती है।" लारेंस की पत्नी फ्रीडा ने ऐसा क्यों कहा होगा?

ग. पढ़ने की योग्यता का विस्तार

गद्यांश पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

आकाश में रंग-बिरंगे फूलों की घटाओं के समान उड़ते हुए और वीणा, वंशी, मुरज, जलतरंग आदि का वृंदवादन (आर्केस्ट्रा) बजाते हुए पक्षी कितने सुंदर जान पड़ते हैं। मनुष्य ने बंदूक उठाई, निशाना साधा और कई गाते-उड़ते पक्षी धरती पर ढेले के समान आ गिरे। किसी की लाल-पीली चोंच वाली गर्दन टूट गई है, किसी के पीले सुंदर पंजे टेढ़े हो गये हैं और किसी के इंद्रधनुषी पंख बिखर गये हैं। क्षत-विक्षत रक्तस्नात उन मृत-अर्द्धमृत लघुगीतों में न अब संगीत है न सौंदर्य। परंतु तब भी मारनेवाला अपनी सफलता पर नाच उठता है।

पक्षी जगत में ही नहीं पशु जगत में भी मनुष्य की ध्वंसलीला ऐसी ही निष्ठुर है। पशुजगत में हिरन जैसा निरीह और सुंदर दूसरा पशु नहीं है। उसकी आँखें तो मानो करुणा की चित्रलिपि है। परंतु इसका भी गतिमय सजीव सौंदर्य मनुष्य का मनोरंजन करने में असमर्थ है। मानव को जो जीवन का श्रेष्ठतम रूप है जीवन के अन्य रूपों के प्रति इतनी वितृष्णा और विरक्ति और मृत्यु के प्रति इतना मोह और इतना आकर्षण क्यों?

– महादेवी वर्मा (सोना हिरणी)

1. शिकारी मनुष्य अपनी किस सफलता पर नाच उठता है?
2. लेखिका ने हिरण के आँखों की तुलना किससे की है?
3. लेखिका ने जीवन का श्रेष्ठतम रूप किसे माना है?

© SCERT not to be republished

अभिव्यक्ति–सृजनात्मकता

❖ स्वाभिव्यक्ति

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार–पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. कुछ लोग पक्षियों का शिकार करके अपने घरों की शोभा बढ़ाते हैं। इस संदर्भ में आप अपने विचार प्रकट करें।
2. पक्षियों के निरीक्षक अथवा बर्ड वॉचर की गतिविधियों के बारे में आप क्या जानते हैं?
3. प्रस्तुत पाठ सालिम अली की पर्यावरण के प्रति चिंता को भी व्यक्त करता है। पर्यावरण को बचाने के लिए आप कैसे योगदान दे सकते हैं?

ख. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ–दस वाक्यों में लिखिए।

1. इस पाठ के आधार पर लेखक की भाषा शैली की विशेषताएँ बताइए।
2. इस पाठ के लेखक ने सालिम अली के व्यक्तित्व का जो चित्र खींचा है, उसे अपने शब्दों में लिखिए।
3. सालिम अली की अंतिम यात्रा का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

❖ सृजनात्मक कार्य

टी.वी. के विभिन्न चैनलों जैसे– एनिमल किंगडम, डिस्कवरी चैनल, एनिमल प्लानेट आदि पर दिखाये जानेवाले कार्यक्रम देखकर समाचार पत्र में छापने के लिए एक लेख तैयार कीजिए।

❖ प्रशंसा

लेखक ने मानव की एक भूल पर प्रकाश डालते हुए लिखा है– जंगलों और पहाड़ों, झरनों और आबशारों को वह प्रकृति की नज़र से नहीं आदमी की नज़र से देखने को उत्सुक रहते हैं। मनुष्य प्रकृति को अपनी उपयोगिता की दृष्टि से देखेगा तो उसमें बिगाड़ आना स्वाभाविक है। इसमें सुधार के सुझाव दीजिए।

भाषा की बात

रेखांकित शब्द–समूहों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

1. सुनहरे परिंदों के खूबसूरत पंखों पर सवार **साँवले सपनों** का एक हुजूम मौत की **खामोश वादी** की तरफ अग्रसर है।
2. **भीड़–भाड़ की ज़िन्दगी** और **तनाव के माहौल** से सालिम अली का ये **आखिरी पलायन** है।
3. दूर **क्षितिज तक फैली** ज़मीन और झुके आसमान को छूनेवाली उनकी नज़रों में कुछ–कुछ वैसा ही जादू था जो प्रकृति को अपने घेरे में बाँध लेता है।

परियोजना कार्य

अपने घर या विद्यालय के नज़दीक आपको अक्सर किसी पक्षी को देखने का मौका मिलता होगा। उस पक्षी का नाम, भोजन, खाने का तरीका, रहने की जगह आदि के आधार पर एक चित्रात्मक विवरण तैयार करें।

© SCERT not to be republished

इकाई-III

11. एक कुत्ता और एक मैना

रचनाकार

हज़ारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म सन् 1907 में गाँव 'आरत दूबे का छपरा', बलिया (उत्तर प्रदेश) में हुआ। उन्होंने उच्च शिक्षा काशी हिंदू विश्वविद्यालय से प्राप्त की तथा शांतिनिकेतन, काशी हिंदू विश्वविद्यालय एवं पंजाब विश्वविद्यालय में अध्यापन-कार्य किया। सन् 1979 में उनका देहांत हो गया।

साहित्य का इतिहास, आलोचना, शोध और उपन्यास के क्षेत्र में द्विवेदी जी का योगदान विशेष उल्लेखनीय है। **अशोक के फूल, कुटज, कल्पलता, बाणभट्ट की आत्मकथा, पुनर्नवा, हिंदी साहित्य का उद्भव और विकास, हिंदी साहित्य की भूमिका, कबीर** उनकी प्रसिद्ध कृतियाँ हैं। उन्हें **साहित्य अकादमी पुरस्कार** एवं **पद्मभूषण अलंकरण** से सम्मानित किया गया।

द्विवेदी जी ने साहित्य की अनेक विधाओं में उच्च कोटि की रचनाएँ कीं। उनके ललित निबंध विशेष उल्लेखनीय हैं। जटिल, गंभीर और दर्शन प्रधान बातों को भी सरल, सुबोध एवं मनोरंजक ढंग से प्रस्तुत करना द्विवेदी जी के लेखन की विशेषता है। उनका रचना-कर्म एक सहृदय विद्वान का रचना-कर्म है जिसमें शास्त्र के ज्ञान, परंपरा के बोध और लोकजीवन के अनुभव का सृजनात्मक सामंजस्य है।

©SCERT not to be republished

प्रस्तावना प्रसंग

एक बार विनोबा जी देहातों में भ्रमण कर रहे थे। तभी एक ग्रामीण ने दूसरे से कहा– "अरे! तू जाणता है यो कौण है?" दूसरे ने कहा– "ना रे! मैं तो ना जाणता। होगा कोई साधु।" पहले ने कहा– "अरे वाह! तू ना जाणता? यो गाँधी महात्मा हैं।" यह सुनकर दूसरा ग्रामीण बहुत हँसा और कहा– "तू भी खूब है, अरे गाँधी महात्मा तो मर गये।" इस पर पहले ने बड़े विश्वास के साथ कहा– "बावले यो तू क्या कहै? अरे! कहीं महात्मा मरा करे हैं?"

प्रश्न

1. आप के विचार में महात्मा लोगों की क्या विशेषताएँ होती हैं?
2. "बावले यो तू क्या कहै? अरे! कहीं महात्मा मरा करे हैं?"–ग्रामीण ने ऐसा क्यों कहा?
3. आप ऐसे कौन–कौन से काम करना चाहेंगे जिससे आप का नाम सदा याद किया जाए?

भूमिका

एक कुत्ता और एक मैना निबंध में न केवल पशु-पक्षियों के प्रति मानवीय प्रेम प्रदर्शित है, बल्कि पशु-पक्षियों से मिलने वाले प्रेम, भक्ति, विनोद और करुणा जैसे मानवीय भावों का विस्तार भी है। इसमें रवींद्रनाथ की कविताओं और उनसे जुड़ी स्मृतियों के ज़रिए गुरुदेव की संवेदनशीलता, आंतरिक विराटता और सहजता के चित्र तो उकेरे ही गए हैं, पशु-पक्षियों के संवेदनशील जीवन का भी बहुत सूक्ष्म निरीक्षण है। यह निबंध सभी जीवों को प्रेम की प्रेरणा देता है।

आज से कई वर्ष पहले गुरुदेव के मन में आया कि शांतिनिकेतन को छोड़कर कहीं अन्यत्र जाएँ। स्वास्थ्य बहुत अच्छा नहीं था। शायद इसलिए, या पता नहीं क्यों, तै पाया कि वे श्रीनिकेतन के पुराने तिमंजिले मकान में कुछ दिन रहें। शायद मौज में आकर ही उन्होंने यह निर्णय किया हो। वे सबसे ऊपर के तल्ले में रहने लगे। उन दिनों ऊपर तक पहुँचने के लिए लोहे की चक्करदार सीढ़ियाँ थीं, और वृद्ध और क्षीणवपु रवींद्रनाथ के लिए उस पर चढ़ सकना असंभव था। फिर भी बड़ी कठिनाई से उन्हें वहाँ ले जाया जा सका।

उन दिनों छुट्टियाँ थीं। आश्रम के अधिकांश लोग बाहर चले गए थे। एक दिन हमने सपरिवार उनके 'दर्शन' की ठानी। 'दर्शन' को मैं जो यहाँ विशेष रूप से दर्शनीय बनाकर लिख रहा हूँ, उसका कारण यह है कि गुरुदेव के पास जब कभी मैं जाता था तो प्रायः वे यह कहकर मुस्कुरा देते थे कि 'दर्शनार्थी हैं क्या?' शुरू-शुरू में मैं उनसे ऐसी बाँग्ला में बात करता था, जो वस्तुतः हिंदी-मुहावरों का अनुवाद हुआ करती थी। किसी बाहर के अतिथि को जब मैं उनके पास ले जाता था तो कहा करता था, 'एक भद्र लोक आपनार दर्शनेर जन्य ऐसे छेन।' यह बात हिंदी में जितनी प्रचलित है, उतनी बाँग्ला में नहीं। इसलिए गुरुदेव जरा मुसकरा देते थे। बाद में मुझे मालूम हुआ कि मेरी यह भाषा बहुत अधिक पुस्तकीय है और गुरुदेव ने उस 'दर्शन' शब्द को पकड़ लिया था। इसलिए जब कभी मैं असमय में पहुँच जाता था तो वे हँसकर पूछते थे 'दर्शनार्थी लेकर आए हो क्या? यहाँ यह दुख के साथ कह देना चाहता हूँ कि अपने देश के दर्शनार्थियों में कितने ही इतने प्रगल्भ होते थे कि समय-असमय, स्थान-अस्थान, अवस्था-अनवस्था की एकदम परवा नहीं करते थे और रोकते रहने पर भी आ ही जाते थे। ऐसे 'दर्शनार्थियों' से गुरुदेव कुछ भीत-भीत से रहते थे। अस्तु मैं मय बाल-बच्चों के एक दिन श्रीनिकेतन जा पहुँचा। कई दिनों से उन्हें देखा नहीं था।

गुरुदेव वहाँ बडे आनंद में थे। अकेले रहते थे। भीड़-भाड़ उतनी नहीं होती थी, जितनी शांतिनिकेतन में। जब हम लोग ऊपर गए तो गुरुदेव बाहर एक कुर्सी पर चुपचाप बैठे अस्तगामी सूर्य की ओर ध्यान-स्तिमित नयनों से देख रहे थे। हम लोगों को देखकर मुसकराए, बच्चों से ज़रा छेड़छाड़ की, कुशल-प्रश्न पूछे और फिर चुप हो रहे। ठीक उसी समय उनका कुत्ता धीरे-धीरे ऊपर आया और उनके पैरों के पास खड़ा होकर पूँछ हिलाने लगा। गुरुदेव ने उसकी पीठ पर हाथ फेरा। वह आँखें मूँदकर अपने रोम-रोम से उस स्नेह-रस का अनुभव करने लगा। गुरुदेव ने हम लोगों की ओर देखकर कहा, ''देखा तुमने, यह आ गए। कैसे इन्हें मालूम हुआ कि मैं यहाँ हूँ, आश्चर्य है! और देखो, कितनी परितृप्ति इनके चेहरे पर दिखाई दे रही है।''

हम लोग उस कुत्ते के आनंद को देखने लगे। किसी ने उसे राह नहीं दिखाई थी, न उसे यह बताया था कि उसके स्नेह-दाता यहाँ से दो मील दूर हैं और फिर भी वह पहुँच गया। इसी कुत्ते को लक्ष्य करके उन्होंने 'आरोग्य' में इस भाव की एक कविता लिखी थी- ''प्रतिदिन प्रातःकाल यह भक्त कुत्ता स्तब्ध होकर आसन के पास तब तक बैठा रहता है, जब तक अपने हाथों के स्पर्श से मैं इसका संग नहीं

© CIEFL not to be republished

स्वीकार करता। इतनी-सी स्वीकृति पाकर ही उसके अंग-अंग में आनंद का प्रवाह बह उठता है। इस वाक्यहीन प्राणिलोक में सिर्फ यही एक जीव अच्छा-बुरा सबको भेदकर संपूर्ण मनुष्य को देख सका है, उस आनंद को देख सका है, जिसे प्राण दिया जा सकता है, जिसमें अहैतुक प्रेम ढाल दिया जा सकता है, जिसकी चेतना असीम चैतन्य लोक में राह दिखा सकती है। जब मैं इस मूक हृदय का प्राणपण आत्मनिवेदन देखता हूँ, जिसमें वह अपनी दीनता बताता रहता है, तब मैं यह सोच ही नहीं पाता कि उसने अपने सहज बोध से मानव स्वरूप में कौन सा मूल्य आविष्कार किया है, इसकी भाषाहीन दृष्टि की करुण व्याकुलता जो कुछ समझती है, उसे समझा नहीं पाती और मुझे इस सृष्टि में मनुष्य का सच्चा परिचय समझा देती है।'' इस प्रकार कवि की मर्मभेदी दृष्टि ने इस भाषाहीन प्राणी की करुण दृष्टि के भीतर उस विशाल मानव-सत्य को देखा है, जो मनुष्य, मनुष्य के अंदर भी नहीं देख पाता।

मैं जब यह कविता पढ़ता हूँ तब मेरे सामने श्रीनिकेतन के तितल्ले पर की वह घटना प्रत्यक्ष-सी हो जाती है। वह आँख मूँदकर अपरिसीम आनंद, 'वह मूक हृदय का प्राणपण आत्मनिवेदन' मूर्तिमान हो जाता है। उस दिन मेरे लिए वह एक छोटी-सी घटना थी, आज वह विश्व की अनेक महिमाशाली घटनाओं की श्रेणी में बैठ गई है। एक आश्चर्य की बात और इस प्रसंग में उल्लेख की जा सकती है। जब गुरुदेव का चिताभस्म कलकत्ते (कोलकाता) से आश्रम में लाया गया, उस समय भी न जाने किस सहज बोध के बल पर वह कुत्ता आश्रम के द्वार तक आया और चिताभस्म के साथ अन्यान्य आश्रमवासियों के साथ शांत गंभीर भाव से उत्तरायण तक गया। आचार्य क्षितिमोहन सेन सबके आगे थे। उन्होंने मुझे बताया कि वह चिताभस्म के कलश के पास थोड़ी देर चुपचाप बैठा भी रहा।

कुछ और पहले की घटना याद आ रही है। उन दिनों शांतिनिकेतन में नया ही आया था। गुरुदेव से अभी उतना धृष्ट नहीं हो पाया था। गुरुदेव उन दिनों सुबह अपने बगीचे में टहलने के लिए निकला करते थे। मैं एक दिन उनके साथ हो गया था। मेरे साथ एक और पुराने अध्यापक थे और सही बात तो यह है कि उन्होंने ही मुझे भी अपने साथ ले लिया था। गुरुदेव एक-एक फूल-पत्ते को ध्यान से देखते हुए अपने बगीचे में टहल रहे थे और उक्त अध्यापक महाशय से बातें करते जा रहे थे। मैं चुपचाप सुनता जा रहा था। गुरुदेव ने बातचीत के सिलसिले में एक बार

कहा, ''अच्छा साहब, आश्रम के कौए क्या हो गए? उनकी आवाज़ सुनाई ही नहीं देती?'' न तो मेरे साथी उन अध्यापक महाशय को यह खबर थी और न मुझे ही। बाद में मैंने लक्ष्य किया कि सचमुच कई दिनों से आश्रम में कौए नहीं दीख रहे हैं। मैंने तब तक कौओं को सर्वव्यापक पक्षी ही समझ रखा था। अचानक उस दिन मालूम हुआ कि ये भले आदमी भी कभी-कभी प्रवास को चले जाते हैं या चले जाने को बाध्य होते हैं। एक लेखक ने कौओं की आधुनिक साहित्यिकों से उपमा दी है, क्योंकि इनका मोटो है 'मिसचिफ़ फार मिसचिफ़ सेक' (शरारत के लिए ही शरारत)। तो क्या कौओं का प्रवास भी किसी शरारत के उद्देश्य से ही था? प्रायः एक सप्ताह के बाद बहुत कौए दिखाई दिए।

एक दूसरी बार मैं सवेरे गुरुदेव के पास उपस्थित था। उस समय एक लँगड़ी मैना फुदक रही थी। गुरुदेव ने कहा, ''देखते हो, यह यूथभ्रष्ट है। रोज़ फुदकती है, ठीक यहीं आकर। मुझे इसकी चाल में एक करुण-भाव दिखाई देता है। ''गुरुदेव ने अगर कह न दिया होता तो मुझे उसका करुण-भाव एकदम नहीं दीखता। मेरा अनुमान था कि मैना करुण भाव दिखानेवाला पक्षी है ही नहीं। वह दूसरों पर अनुकंपा ही दिखाया करती है। तीन-चार वर्ष से मैं एक नए मकान में रहने लगा हूँ। मकान के निर्माताओं ने दीवारों में चारों ओर एक-एक सूराख छोड़ रखी है। यह कोई आधुनिक वैज्ञानिक खतरे का समाधान होगा। सो, एक मैना-दंपत्ति नियमित भाव से प्रतिवर्ष यहाँ गृहस्थी जमाया करते हैं, तिनके और चीथड़ों का अंबार लगा देते हैं। भलेमानस गोबर के टुकड़े तक ले आना नहीं भूलते। हैरान होकर हम सूराखों में ईंटें भर देते हैं, परंतु वे खाली बची जगह का भी उपयोग कर लेते हैं। पति-पत्नी जब कोई एक तिनका लेकर सूराख में रखते हैं तो उनके भाव देखने लायक होते हैं। पत्नी देवी का तो क्या कहना! एक तिनका ले आईं तो फिर एक पैर पर खड़ी होकर ज़रा पंखों को फटकार दिया, चोंच को अपने ही परों से साफ कर लिया और नाना प्रकार की मधुर और विजयोद्घोषी वाणी में गान शुरू कर दिया। हम लोगों की तो उन्हें परवा ही नहीं रहती। अचानक इसी समय अगर पति देवता भी कोई कागज़ का या गोबर का टुकड़ा लेकर उपस्थित हुए तब क्या कहना! दोनों के नाच-गान और आनंद-नृत्य से सारा मकान मुखरित हो उठता है। इसके बाद ही पत्नी देवी ज़रा हम लोगों की ओर मुखातिब होकर लापरवाही-भरी अदा से कुछ बोल देती हैं। पति देवता भी मानो मुसकराकर हमारी ओर देखते, कुछ रिमार्क करते और मुँह फेर लेते हैं। पक्षियों की भाषा तो मैं नहीं जानता; पर मेरा निश्चित विश्वास है कि उनमें कुछ इस तरह की बातें हो जाया करती हैं;

पत्नी- यह लोग यहाँ कैसे आ गए जी?

पति- उँह बेचारे आ गए हैं, तो रह जाने दो। क्या कर लेंगे!

पत्नी- लेकिन फिर भी इनको इतना तो खयाल होना चाहिए कि यह हमारा प्राइवेट घर है।

पति- आदमी जो हैं, इतनी अकल कहाँ?

पत्नी- जाने भी दो।

पति- और क्या!

सो, इस प्रकार की मैना कभी करुण हो सकती है, यह मेरा विश्वास ही नहीं था। गुरुदेव की बात पर मैंने ध्यान से देखा तो मालूम हुआ कि सचमुच ही उसके मुख पर एक करुण भाव है। शायद यह विधुर पति था, जो पिछली स्वयंवर-सभा के युद्ध में आहत और परास्त हो गया था। या विधवा पत्नी है, जो पिछड़े बिड़ाल के आक्रमण के समय पति को खोकर युद्ध में ईषत् चोट खाकर एकांत विहार कर रही है। हाय, क्यों इसकी ऐसी दशा है! शायद इसी मैना को लक्ष्य करके गुरुदेव ने बाद में एक कविता लिखी थी, जिसके कुछ अंश का सार इस प्रकार हैः

''उस मैना को क्या हो गया है, यही सोचता हूँ। क्यों वह दल से अलग होकर अकेली रहती है? पहले दिन देखा था सेमर के पेड़ के नीचे मेरे बगीचे में। जान पड़ा जैसे एक पैर से लँगड़ा रही हो। इसके बाद उसे रोज़ सवेरे देखता हूँ- संगीहीन होकर कीड़ों का शिकार करती फिरती है। चढ़ जाती है बरामदे में। नाच-नाचकर चहलकदमी किया करती है, मुझसे ज़रा भी नहीं डरती। क्यों है ऐसी दशा इसकी? समाज के किस दंड पर उसे निर्वासन मिला है, दल के किस अविचार पर उसने मान किया है? कुछ ही दूरी पर और मैनाएँ बक-झक कर रही हैं, घास पर उछल-कूद रही हैं। उड़ती फिरती हैं शिरीषवृक्ष की शाखाओं पर। इस बेचारी को ऐसा कुछ भी शौक नहीं है। इसके जीवन में कहाँ गाँठ पड़ी है, यही सोच रहा हूँ। सवेरे की धूप में मानो सहज मन से आहार चुगती हुई झड़े हुए पत्तों पर कूदती फिरती है सारा दिन। किसी के ऊपर इसका कुछ अभियोग है, यह बात बिलकुल नहीं जान पड़ती। इसकी चाल में वैराग्य का गर्व भी तो नहीं है, दो आग-सी जलती आँखें भी तो नहीं दिखतीं।'' इत्यादि।

जब मैं इस कविता को पढ़ता हूँ तो उस मैना की करुण मूर्ति अत्यंत साफ होकर सामने आ जाती है। कैसे मैंने उसे देखकर भी नहीं देखा कि किस प्रकार कवि की आँखें उस बिचारी के मर्मस्थल तक पहुँच गईं, सोचता हूँ तो हैरान हो रहता हूँ। एक दिन वह मैना उड़ गई। सायंकाल कवि ने उसे नहीं देखा। जब वह अकेले जाया करती है उस डाल के कोने में, जब झींगुर अंधकार में झनकारता रहता है, जब हवा में बाँस के पत्ते झरझराते रहते हैं, पेड़ों की फाँक से पुकारा करता है नींद तोड़ने वाला संध्यातारा! कितना करुण है उसका गायब हो जाना!

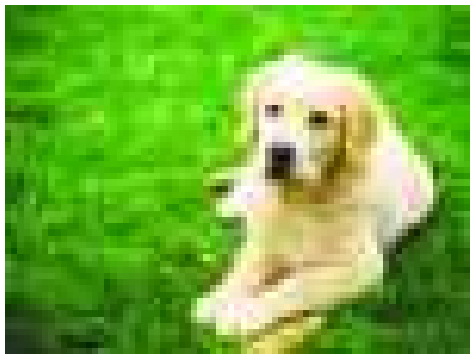

© SCERT not to be republished

प्रश्न-अभ्यास

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

❖ विचार-विमर्श

1. लोग अनेक प्रकार के जानवर घर में पालते हैं। कुछ शौक से तो कुछ उपयोग से। इनका ठीक प्रकार से रख-रखाव न होने के कारण कई प्रकार की बीमारियों के फैलने की भी आशंका होती है। चर्चा कीजिए और बताइए कि जानवरों को पालते समय किन-किन बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए।
2. पाठ में गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर की पशु-पक्षियों के प्रति संवेदनशीलता दर्शाई गई है। सामान्यतः महान लोगों में प्रकृति के प्रति विशेष संवेदनशीलता पाई जाती है। अच्छा इंसान प्रकृति के सभी तत्वों के प्रति सद्भाव रखता है। इस बारे में अपने विचार बताइए।

❖ पढ़ना, भाव समझना और भाव विस्तार

क. पाठ में उत्तर ढूँढ़िए।

1. गुरुदेव ने शांतिनिकेतन को छोड़ कहीं और रहने का मन क्यों बनाया?
2. लेखक की बातें सुनकर गुरुदेव क्यों मुसकरा रहे थे?
3. कुत्ते की किस विशेषता पर गुरुदेव मुग्ध थे?
4. कौए के संबंध में लेखक की कौन-सी धारणा गलत निकली?
5. लेखक ने मैना को विधुर पति या आहत मैना क्यों माना?

ख. पाठ समझकर उत्तर दीजिए।

1. "मूक प्राणी मनुष्य से कम संवेदनशील नहीं होते।" पाठ के आधार पर सपष्ट कीजिए।
2. गुरुदेव द्वारा मैना को लक्ष्य करके लिखी कविता के मर्म को लेखक कब समझ पाया?
3. आशय स्पष्ट कीजिए।

   इस प्रकार कवि की मर्मभेदी दृष्टि ने इस भाषाहीन प्राणी की करुण दृष्टि के भीतर उस विशाल मानव-सत्य को देखा है, जो मनुष्य, मनुष्य के अंदर भी नहीं देख पाता।

ग. पढ़ने की योग्यता का विस्तार

गद्यांश पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

शांतिनिकेतन के कला-विद्यालय में श्रीमंत परिवार का एक शिक्षार्थी प्रविष्ट हुआ। उसे अपना कार्य अपने हाथों करने की आदत नहीं थी। कुछ ही दिनों में उसके कमरे में धूल

© SCERT not to be republished

जम गयी। दीवारों पर जाले लग गये। एक दिन वह भोजन करने के बाद लौटने पर यह देख कर दंग रह गया कि सभी वस्तुएँ सही जगहों पर रखी हैं, रंग का सामान और कूचियाँ सुव्यवस्थित हैं, समीप ही धूपबत्ती जल रही है। यह क्रम कई दिनों तक चालू रहा। एक दिन वह भोजन करके अपने कमरे में जरा जल्दी लौट आया। उसने देखा, कला-विभाग के आचार्य नंदलाल बसु उसका कमरा साफ कर रहे हैं। नंदलाल बाबू कहने लगे, ''तुम मेरे छात्र हो। तुम्हारे सब प्रकार के कल्याण का दायित्व मुझ पर है। तुम बचपन से स्वच्छता में पले हो, परंतु उसके लिए तुम्हें नौकरों के सहारे रहना पड़ा है। स्वाभाविक है कि मलिन स्थान पर तुम्हारा चित्त विकल रहता होगा और तुम वांछित कार्य नहीं कर पाते होगे। कला केवल रंग-रेखाओं की रचना मात्र नहीं है, उसके लिए तुम्हारे जीवन में सुरुचि की आवश्यकता है।

प्रश्न 1. विद्यार्थी अपने दैनिक कार्य सही समय पर क्यों नहीं कर पाता होगा?

2. आचार्य नंदलाल बसु ने छात्र का कमरा क्यों साफ किया?

3. इस गद्यांश को उचित शीर्षक दीजिए।

अभिव्यक्ति–सृजनात्मकता

❖ स्वाभिव्यक्ति

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार–पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. पशु–पक्षियों के आवास अब मनुष्यों ने छीन लिए हैं। न तो जंगल पर्याप्त मात्रा में बचे हैं, न पेड़। इस कारण अनेक पशु–पक्षी लुप्त होते जा रहे हैं? इस संबंध में क्या प्रयास किये जाने चाहिए।
2. गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर की क्या विशेषताएँ थीं?
3. पाठ में आधुनिक साहित्यकारों की तुलना कौओं से करने का संदर्भ आया है। पाठ के आधार पर बताइए कि एक साहित्यकार में कौन–कौन से गुणों का होना अनिवार्य है?

ख. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ–दस वाक्यों में लिखिए।

1. पढ़ना केवल अक्षरों को पढ़ना ही नहीं है। व्यक्तियों के चेहरे, जीव–जंतुओं व प्रकृति को भी पढ़ा जा सकता है। इनकी अभिव्यक्ति को समझा जा सकता है। अनुमान लगाइए और बताइए कि प्रकृति हमें क्या–क्या संदेश देती है?
2. लेखक एक महान व्यक्ति गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर से मिला। उसने उस घटना के बारे में अपने विचार लिखे। जिसे हम संस्मरण रूप में पढ़ रहे हैं। आपने भी अपने पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से अनेक महापुरुषों के बारे में जाना है। इस आधार पर बताइए कि महान बनने के लिए व्यक्ति में कौन–कौन से गुण होने चाहिए?

© SCERT not to be republished

❖ सृजनात्मक कार्य

जीव-जंतुओं से प्रेम करने का तात्पर्य प्रकृति के प्रति सजग होना भी है। आज आधुनिकता एवं रूढ़िवादिता दोनों ही प्रकृति के लिए खतरा बन गई हैं। इस संबंध में एक लेख लिखिए।

❖ प्रशंसा

पक्षियों को दाने डालना, गायों को रोटी खिलाना, कैद परिंदों को आज़ाद करना, जीव-जंतुओं की सेवा करना आदि पुण्य कार्य माना जाता है। आप पशु-पक्षियों के संरक्षण के लिए क्या करना चाहेंगे?

भाषा की बात

1. -गुरुदेव ज़रा मुसकरा दिए।

   -मैं जब यह कविता पढ़ता हूँ।

   ऊपर दिए गए वाक्यों में एक वाक्य में अकर्मक क्रिया है और दूसरे में सकर्मक। इस पाठ को ध्यान से पढ़कर सकर्मक और अकर्मक क्रिया वाले चार-चार वाक्य छाँटिए।

2. निम्नलिखित वाक्यों में कर्म के आधार पर क्रिया-भेद बताइए।

   i. मीना कहानी सुनाती है।

   ii. अभिनव सो रहा है।

   iii. गाय घास खाती है।

   iv. मोहन ने भाई को गेंद दी।

   v. लड़कियाँ रोने लगीं।

3. नीचे पाठ में से शब्द-युग्मों के कुछ उदाहरण दिए गए हैं, जैसे-

   समय-असमय, अवस्था-अनवस्था

   इन शब्दों में 'अ' तथा 'अन्' उपसर्ग लगाकर नए शब्द बनाए गए हैं। पाठ में से कुछ शब्द चुनिए और 'अ' तथा 'अन्' उपसर्ग लगाकर नए शब्द बनाइए।

परियोजना कार्य

पशु-पक्षियों के बारे में लिखी कविताओं का संग्रह करें और चित्रों के साथ उन्हें प्रदर्शित करें।

© SCERT not to be republished

इकाई-III

12. उपभोक्तावाद की संस्कृति

रचनाकार

श्यामाचरण दुबे का जन्म सन् 1922 में मध्य प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र में हुआ। उन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय से मानव विज्ञान में पीएच.डी. की। वे भारत के अग्रणी समाज वैज्ञानिक रहें हैं। उनका देहांत सन् 1996 में हुआ।

मानव और संस्कृति, परंपरा और इतिहास बोध, संस्कृति तथा शिक्षा, समाज और भविष्य, भारतीय ग्राम, संक्रमण की पीड़ा, विकास का समाजशास्त्र, समय और संस्कृति हिंदी में उनकी प्रमुख पुस्तकें हैं। प्रो. दुबे ने विभिन्न विश्वविद्यालयों में अध्यापन किया तथा अनेक संस्थानों में प्रमुख पदों पर रहे। जीवन, समाज और संस्कृति के ज्वलंत विषयों पर उनके विश्लेषण एवं स्थापनाएँ उल्लेखनीय हैं। भारत की जनजातियों और ग्रामीण समुदायों पर केंद्रित उनके लेखों ने बृहत समुदाय का ध्यान आकर्षित किया है। वे जटिल विचारों को तार्किक विश्लेषण के साथ सहज भाषा में प्रस्तुत करते हैं।

प्रस्तावना प्रसंग

प्रश्न

1. इस विज्ञापन से हमें क्या संदेश मिलता है?
2. उत्पादों की गुणवत्ता को हम किन चिह्नों द्वारा पहचान सकते हैं?
3. अपने किसी एक पसंदीदा विज्ञापन के बारे में बताइए।

भूमिका

उपभोक्तावाद की संस्कृति निबंध बाजार की गिरफ़्त में आ रहे समाज की वास्तविकता को प्रस्तुत करता है। लेखक का मानना है कि हम विज्ञापन की चमक-दमक के कारण वस्तुओं के पीछे भाग रहे हैं, हमारी निगाह गुणवत्ता पर नहीं है। संपन्न और अभिजन वर्ग द्वारा प्रदर्शनपूर्ण जीवन शैली अपनाई जा रही है, जिसे सामान्य जन भी ललचाई निगाहों से देखते हैं। यह सभ्यता के विकास की चिंताजनक बात है, जिसे उपभोक्तावाद ने परोसा है। लेखक की यह बात महत्वपूर्ण है कि जैसे-जैसे यह दिखावे की संस्कृति फैलेगी, सामाजिक अशांति और विषमता भी बढ़ेगी।

© NCERT not to be republished

धीरे-धीरे सब कुछ बदल रहा है। एक नयी जीवन-शैली अपना वर्चस्व स्थापित कर रही है। उसके साथ आ रहा है एक नया जीवन-दर्शन-उपभोक्तावाद का दर्शन। उत्पादन बढ़ाने पर ज़ोर है चारों ओर। यह उत्पादन आपके लिए है; आपके भोग के लिए है, आपके सुख के लिए है। 'सुख' की व्याख्या बदल गई है। उपभोग-भोग ही सुख है। एक सूक्ष्म बदलाव आया है नई स्थिति में। उत्पाद तो आपके लिए हैं, पर आप भूल जाते हैं कि जाने-अनजाने आज के माहौल में आपका चरित्र भी बदल रहा है और आप उत्पाद को समर्पित होते जा रहे हैं।

विलासिता की सामग्रियों से बाजार भरा पड़ा है, जो आपको लुभाने की जी तोड़ कोशिश में निरंतर लगी रहती हैं। दैनिक जीवन में काम आने वाली वस्तुओं को ही लीजिए। टूथ-पेस्ट चाहिए? यह दाँतों को मोती जैसा चमकीला बनाता है, यह मुँह की दुर्गंध हटाता है। यह मसूड़ों को मज़बूत करता है और यह 'पूर्ण सुरक्षा' देता है। वह सब करके जो तीन-चार पेस्ट अलग-अलग करते हैं, किसी पेस्ट का 'मैजिक' फार्मूला है। कोई बबूल या नीम के गुणों से भरपूर है, कोई ऋषि-मुनियों द्वारा स्वीकृत तथा मान्य वनस्पति और खनिज तत्वों के मिश्रण से बना है। जो चाहे चुन लीजिए। यदि पेस्ट अच्छा है तो ब्रुश भी अच्छा होना चाहिए। आकार, रंग, बनावट, पहुँच और सफ़ाई की क्षमता में अलग-अलग, एक से बढ़कर एक। मुँह की दुर्गंध से बचने के लिए माउथ वाश भी चाहिए। सूची और भी लंबी हो सकती है पर इतनी चीजों का ही बिल काफ़ी बड़ा हो जाएगा, क्योंकि आप शायद बहुविज्ञापित और कीमती ब्रांड खरीदना ही पसंद करें। सौंदर्य प्रसाधनों की भीड़ तो चमत्कृत कर देने वाली है- हर माह उसमें नए-नए उत्पाद जुड़ते जाते हैं। साबुन ही देखिए। एक में हलकी खुशबू है, दूसरे में तेज़। एक दिन भर आपके शरीर को तरोताज़ा रखता है, दूसरा पसीना रोकता है, तीसरा जर्म्स से आपकी रक्षा करता है। यह लीजिए शुद्ध गंगाजल में बना साबुन। चमड़ी को नर्म रखने के लिए यह लीजिए सिने स्टार्स के सौंदर्य का रहस्य, उनका मनपसंद साबुन। सच्चाई का अर्थ समझना चाहते हैं, यह लीजिए शरीर को पवित्र रखना चाहते हैं। यह लीजिए- महँगी हैं, पर आपके सौंदर्य में निखार ला देगा। सभ्रांत महिलाओं की ड्रेसिंग टेबल पर तीस-तीस हज़ार की सौंदर्य सामग्री होनी तो मामूली बात है। पेरिस से परफ़्यूम मँगाइए, इतना ही और खर्च हो जाएगा। ये प्रतिष्ठा-चिह्न हैं, समाज में आपकी हैसियत जताते हैं। पुरुष भी इस दौड़ में पीछे नहीं हैं पहले उनका काम साबुन और तेल से चल जाता था। आफ़्टर शेव और कोलोन बाद में आए। अब तो इस सूची में दर्जन-दो दर्जन चीज़ें और जुड़ गई हैं।

छोड़िए इस सामग्री को। वस्तु और परिधान की दुनिया में आइए। जगह-जगह बुटीक खुल गए हैं, नए-नए डिज़ाइन के परिधान बाजार में आ गए हैं। ये ट्रेंडी हैं और महँगे भी। पिछले वर्ष के फैशन इस वर्ष? शर्म की बात है। घड़ी पहले समय दिखाती थी। उससे यदि यही काम लेना हो तो चार-पाँच सौ में मिल जाएगी। हैसियत जताने के लिए आप पचास-साठ हज़ार से लाख-डेढ़ लाख की घड़ी भी ले सकते हैं। संगीत की समझ हो या नहीं, कीमती म्यूज़िक सिस्टम ज़रूरी है। कोई बात नहीं यदि आप उसे ठीक तरह चला भी न सकें। कंप्यूटर काम के लिए तो खरीदे ही जाते हैं, महज़ दिखावे के लिए उन्हें खरीदने

वालों की संख्या भी कम नहीं है। खाने के लिए पाँच सितारा होटल हैं। वहाँ तो अब विवाह भी होने लगे हैं। बीमार पड़ने पर पाँच सितारा अस्पतालों में आइए। सुख-सुविधाओं और अच्छे इलाज के अतिरिक्त यह अनुभव काफ़ी समय तक चर्चा का विषय भी रहेगा, पढ़ाई के लिए पाँच सितारा पब्लिक स्कूल हैं, शीघ्र ही शायद कॉलेज और यूनिवर्सिटी भी बन जाए। भारत में तो यह स्थिति अभी नहीं आई पर अमरीका और यूरोप के कुछ देशों में आप मरने के पहले ही अपने अंतिम संस्कार और अनंत विश्राम का प्रबंध भी कर सकते हैं- एक कीमत पर। आपकी कब्र के आसपास सदा हरी घास होगी, मनचाहे फूल होंगे। चाहे तो फव्वारे होंगे और मंद ध्वनि में निरंतर संगीत भी। कल भारत में भी यह संभव हो सकता है। अमरीका में आज जो हो रहा है, कल वह भारत में भी आ सकता है। प्रतिष्ठा के अनेक रूप होते हैं। चाहे वे हास्यास्पद ही क्यों न हों। यह है एक छोटी-सी झलक उपभोक्तावादी समाज की। यह विशिष्टजन का समाज है पर सामान्यजन भी इसे ललचाई निगाहों से देखते हैं। उनकी दृष्टि में, एक विज्ञापन की भाषा में, यही है राइट च्वाइस बेबी।

अब विषय के गंभीर पक्ष की ओर आएँ। इस उपभोक्ता संस्कृति का विकास भारत में क्यों हो रहा है?

सामंती संस्कृति के तत्व भारत में पहले भी रहे हैं। उपभोक्तावाद इस संस्कृति से जुड़ा रहा है। आज सामंत बदल गए हैं, सामंती संस्कृति का मुहावरा बदल गया है।

हम सांस्कृतिक अस्मिता की बात कितनी ही करें; परंपराओं का अवमूल्यन हुआ है, आस्थाओं का क्षरण हुआ है। कड़वा सच तो यह है कि हम बौद्धिक दासता स्वीकार कर रहे हैं, पश्चिम के सांस्कृतिक उपनिवेश बन रहे हैं। हमारी नई संस्कृति अनुकरण की संस्कृति है। हम आधुनिकता के झूठे प्रतिमान अपनाते जा रहे हैं। प्रतिष्ठा की अंधी प्रतिस्पर्धा में जो अपना है उसे खोकर छद्म आधुनिकता की गिरफ़्त में आते जा रहे हैं। संस्कृति की नियंत्रक शक्तियों के क्षीण हो जाने के कारण हम दिग्भ्रमित हो रहे हैं। हमारा समाज ही अन्य-निर्देशित होता जा रहा है। विज्ञापन और प्रसार के सूक्ष्म तंत्र हमारी मानसिकता बदल रहे हैं। उनमें सम्मोहन की शक्ति है, वशीकरण की भी।

अंततः इस संस्कृति के फैलाव का परिणाम क्या होगा? यह गंभीर चिंता का विषय है। हमारे सीमित संसाधनों का घोर अपव्यय हो रहा है। जीवन की गुणवत्ता आलू के चिप्स से नहीं सुधरती। न बहुविज्ञापित शीतल पेयों से। भले ही वे अंतर्राष्ट्रीय हों। पीज़ा और बर्गर कितने ही आधुनिक हों, हैं वे कूड़ा खाद्य। समाज में वर्गों की दूरी बढ़ रही है, सामाजिक सरोकारों में कमी आ रही है। जीवन स्तर

© SCERT not to be republished

का यह बढ़ता अंतर आक्रोश और अशांति को जन्म दे रहा है। जैसे-जैसे दिखावे की यह संस्कृति फैलेगी, सामाजिक अशांति भी बढ़ेगी। हमारी सांस्कृतिक अस्मिता का ह्रास तो हो ही रहा है, हम लक्ष्य-भ्रम से भी पीड़ित हैं। विकास के विराट उद्देश्य पीछे हट रहे हैं। हम झूठी तुष्टि के तात्कालिक लक्ष्यों का पीछा कर रहे हैं। मर्यादाएँ टूट रही हैं, नैतिक मानदंड ढीले पड़ रहे हैं। व्यक्ति-केंद्रकता बढ़ रही है, स्वार्थ परमार्थ पर हावी हो रहा है। भोग की आकांक्षाएँ आसमान को छू रही हैं। किस बिंदु पर रुकेगी यह दौड़?

गाँधीजी ने कहा था कि हम स्वस्थ सांस्कृतिक प्रभावों के लिए अपने दरवाज़े-खिड़की खुले रखें पर अपनी बुनियाद पर कायम रहें। उपभोक्ता संस्कृति हमारी सामाजिक नींव को ही हिला रही है। यह एक बड़ा खतरा है। भविष्य के लिए यह एक बड़ी चुनौती है।

प्रश्न-अभ्यास

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

❖ विचार-विमर्श

1. आज दूरदर्शन या अन्य टी.वी. चैनलों पर विविध प्रकार के लुभावने विज्ञापन देखे जा सकते हैं। इनमें से कुछ अंधविश्वास को भी प्रेरित करते हैं। कुछ को देखते ही पता चल जाता है कि इनमें सचाई नहीं है। इससे बहुत से लोग छले भी जाते हैं। लोगों को इस संबंध में किस प्रकार जागरूक किया जा सकता है? चर्चा कीजिए।
2. "आज के व्यापारिक प्रतिस्पर्द्धा युग में विज्ञापनों में बातें बढ़ा-चढ़ा कर कहना अनिवार्य है।" इसके पक्ष-विपक्ष में वाद-विवाद कीजिए।

❖ पढ़ना, भाव समझना और भाव विस्तार

क. पाठ में उत्तर ढूँढ़िए।

1. इनसे संबंधित पंक्तियाँ पाठ में ढूँढ़कर लिखिए।
   - प्रतिष्ठा के लिए वस्तुएँ खरीदना
   - उपभोक्तावाद से जन्मा संकट
2. लेखक के अनुसार जीवन में 'सुख' से क्या अभिप्राय है?
3. आज की उपभोक्तावादी संस्कृति हमारे जीवन को किस प्रकार प्रभावित कर रही है?
4. व्यक्ति-केंद्रिकता से क्या अभिप्राय है? लेखक ने इसके बारे में क्या कहा है?

ख. पाठ समझकर उत्तर दीजिए।

1. उपभोक्तावाद से क्या अभिप्राय है? अपने विचार लिखिए।
2. "जाने-अनजाने आज के माहौल में आपका चरित्र भी बदल रहा है और आप उत्पाद को समर्पित हो रहे हैं।" आशय स्पष्ट कीजिए।
3. प्रतिष्ठा के हास्यास्पद रूप से क्या तात्पर्य है? स्पष्ट कीजिए।
4. गांधीजी ने उपभोक्ता संस्कृति को हमारे समाज के लिए चुनौती क्यों कहा है?

© NCERT not to be republished

ग. पढ़ने की योग्यता का विस्तार

प्रस्तुत पद्यांश पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

जी हाँ हुज़ूर, मैं गीत बेचता हूँ
मैं तरह-तरह के गीत बेचता हूँ
मैं किसिम-किसिम के गीत बेचता हूँ।
जी माल देखिए दाम बताऊँगा।
बे काम नहीं है काम बताऊँगा।

यह गीत सुबह का है, गाकर देखें
यह गीत गज़ब का है, ढा कर देखें
यह गीत ज़रा सूने में लिखा था
यह गीत वहाँ पूने में लिखा था।
यह गीत पहाड़ी पर चढ़ जाता है
यह गीत बढ़ाने से बढ़ जाता है।
यह गीत भूख और प्यास भगाता है,
यह मसान में भूत भगाता है।
यह गीत भुवाली की है हवा हुज़ूर
यह गीत तपेदिक की है दवा हुज़ूर
मैं सीधे-सीधे और अटपटे गीत बेचता हूँ।
जी हाँ हुज़ूर, मैं गीत बेचता हूँ।

– भवानी प्रसाद मिश्र

1. कवि अपने गीतों की क्या विशेषता बता रहा है?
2. इस कविता में विज्ञापन की झलक दिखाई देती है। इस दृष्टि से कवि कहाँ तक सफल हुआ है?
3. क्या गीत बेचे जा सकते हैं? इस बारे में अपने विचार दीजिए।

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

❖ स्वाभिव्यक्ति

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. कोई वस्तु आपके लिए उपयोगी हो या न हो, लेकिन टी.वी. पर विज्ञापन देखकर आप उसे खरीदने के लिए अवश्य लालायित होते हैं? क्यों?
2. आपके अनुसार वस्तुओं को खरीदने का आधार वस्तु की गुणवत्ता होनी चाहिए या उसका विज्ञापन? तर्क देकर स्पष्ट कीजिए।
3. आज के विज्ञापनों में अश्लीलता बढ़ती जा रही है। इसके रोकथाम के क्या उपाय किए जाने चाहिए?

ख. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ-दस वाक्यों में लिखिए।

1. आज के उपभोक्तावादी युग में पनप रही 'दिखावे की संस्कृति' पर विचार व्यक्त कीजिए।
2. विज्ञापन में भाषा का विशेष चमत्कार होता है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
3. आज की उपभोक्ता संस्कृति हमारे रीति-रिवाजों और त्यौहारों को किस प्रकार प्रभावित कर रही है? अपने अनुभव के आधार पर एक अनुच्छेद लिखिए।

© SCERT not to be republished

❖ सृजनात्मक कार्य

आप प्रतिदिन टी.वी. पर ढेरों विज्ञापन देखते-सुनते हैं और उनमें से कुछ आपकी ज़बान पर चढ़ जाते हैं। आप अपनी पसंद की किन्हीं दो वस्तुओं पर विज्ञापन तैयार कीजिए।

❖ प्रशंसा

आज के युग को विज्ञापन युग भी कहा जा सकता है। यह सही है कि व्यापारिक विज्ञापन अधिकतर आडंबरपूर्ण होते हैं। लेकिन विज्ञापनों के माध्यम से जनता को जागरूक भी किया जाता है। शिक्षा, पोलियो, उपभोक्ता जागरूकता आदि कार्यक्रमों का प्रचार भी इन्हीं विज्ञापनों के जिम्मे है। आज के समाज में विज्ञापनों के महत्व पर प्रकाश डालिए।

भाषा की बात

1. 'धीरे-धीरे सब कुछ बदल रहा है।' इस वाक्य में 'बदल रहा है' क्रिया है। यह क्रिया कैसे हो रही है-धीरे-धीरे क्रिया-विशेषण है। जो शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं, क्रिया-विशेषण कहलाते हैं। जिन शब्दों से वाक्य में हमें पता चलता है क्रिया कैसे, कब, कितनी और कहाँ हो रही है, वे शब्द क्रिया-विशेषण कहलाते हैं।

क. ऊपर दिए गए उदाहरण को ध्यान में रखते हुए क्रिया-विशेषण से युक्त पाँच वाक्य पाठ में से छाँटकर लिखिए।

ख. धीरे-धीरे, ज़ोर से, लगातार, हमेशा, आजकल, कम, ज़्यादा, यहाँ, उधर, बाहर- इन क्रिया-विशेषण शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए।

ग. नीचे दिए वाक्यों में से क्रिया-विशेषण और विशेषण शब्द छाँटकर अलग लिखिए-

1. कल रात से निरंतर बारिश हो रही है।
2. पेड़ पर लगे पके आम देखकर बच्चों के मुँह में पानी आ गया।
3. रसोईघर से आती पुलाव की हल्की खुशबू से मुझे ज़ोरों की भूख लग आई।
4. उतना ही खाओ जितनी भूख है।
5. विलासिता की वस्तुओं से आजकल बाज़ार भरा पड़ा है।

परियोजना कार्य

समाचार पत्रों के विज्ञापनों को पढ़िए। अपनी पसंद के कुछ विज्ञापन का संकलित कीजिए।

© SCERT not to be republished

पढ़िए - आनंद लीजिए

मैं और मेरा देश

हमारे देश के महान संत स्वामी रामतीर्थ एक बार जापान गए। वे रेल में यात्रा कर रहे थे। एक दिन ऐसा हुआ कि उन्हें खाने को फल न मिले। उन दिनों फल ही उनका भोजन था। गाड़ी एक स्टेशन पर ठहरी। वहाँ भी उन्होंने फलों की खोज की, किन्तु पा न सके। उनके मुँह से निकला ''जापान में शायद अच्छे फल नहीं मिलते।''

एक जापानी युवक प्लेटफॉर्म पर खड़ा था। उसने ये शब्द सुन लिए। सुनते ही वह भागा और कहीं दूर से एक टोकरी ताजे फल ले आया। उसने वे फल स्वामी रामतीर्थ को भेंट किए और कहा, ''लीजिए, आपको फलों की ज़रूरत थी।''

स्वामी जी ने समझा यह कोई फल बेचने वाला है। उन्होंने उससे फलों के दाम पूछे, पर उसने दाम लेने से इंकार कर दिया। बहुत आग्रह करने पर उसने कहा, ''आप इनका मूल्य देना ही चाहते हैं तो अपने देश में जाकर किसी से यह न कहिएगा कि जापान में अच्छे फल नहीं मिलते।''

स्वामी जी युवक का यह उत्तर सुनकर मुग्ध हो गए। उस युवक ने अपने इस कार्य से अपने देश का गौरव न जाने कितना बढ़ा दिया।

इस गौरव की ऊँचाई का अनुमान दूसरी घटना सुनकर ही पूरी तरह लगाया जा सकता है। किसी देश का एक युवक जापान में शिक्षा लेने आया। एक दिन वह सरकारी पुस्तकालय से कोई पुस्तक पढ़ने के लिए लाया। इस पुस्तक में कुछ दुर्लभ चित्र थे। उस युवक ने पुस्तक में से उन चित्रों को निकालकर पुस्तक वापस कर दी। किसी जापानी विद्यार्थी ने उसे देख लिया और पुस्तकालय को उसकी सूचना दे दी। पुलिस ने तलाशी लेकर वे चित्र उस विद्यार्थी के कमरे से बरामद किए और उसे जापान से निकाल दिया गया।

अपराधी को दंड मिलना ही चाहिए, पर मामला यहीं तक नहीं रुका और उस पुस्तकालय के बाहर बोर्ड पर लिख दिया गया कि पुस्तकालय में इस विद्यार्थी का प्रवेश तो वर्जित है ही, उसके देश के निवासियों का भी प्रवेश वर्जित है ।

© SCERT not to be republished

जहाँ एक युवक ने अपने काम से अपने देश का सिर ऊँचा किया था, वहीं दूसरे युवक ने अपने काम से अपने देश के मस्तक पर कलंक का ऐसा टीका लगाया, जो न जाने कितने वर्षों तक संसार की आँखों में उसे लांछित करता रहा।

हम यह समझ लें कि हमारी हीनता और श्रेष्ठता का संबंध देश की हीनता और श्रेष्ठता से जुड़ा हुआ है। जब हम कोई हीन या बुरा काम करते हैं तो हमारे माथे पर ही कलंक का टीका नहीं लगता, बल्कि देश का सिर नीचा होता है और उसकी प्रतिष्ठा गिरती है। जब हम कोई श्रेष्ठ कार्य करते हैं तो उससे हमारा सिर ही नहीं ऊँचा होता, बल्कि देश का भी सिर ऊँचा होता है और उसका गौरव बढ़ता है। इसलिए हमें कोई ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए जिससे देश की प्रतिष्ठा पर आँच आए।

क्या आप चलती रेलों में, मुसाफिर खानों में, क्लबों में, चौपालों पर और मोटरबसों में कभी ऐसी चर्चा करते हैं कि हमारे देश में यह नहीं हो रहा है, वह नहीं हो रहा है और यह गड़बड़ है, यह परेशानी है? साथ ही, क्या आप अपने देश की तुलना किसी अन्य देश के साथ करते हैं कि कौन-सा देश श्रेष्ठ है और कौन-सा देशहीन है? यदि हाँ, तब आपको चिंता होगी कि देश की प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए हमें क्या करना चाहिए।

क्या आप केला खाकर छिलका रास्ते में फेंकते हैं? अपने घर का कूड़ा बाहर फेंकते हैं? अपशब्दों का प्रयोग करते है? इधर की उधर, उधर की इधर लगाते हैं? अपने घर, दफ़्तर, गली को गन्दा रखते हैं? होटलों, धर्मशालाओं में या दूसरे ऐसे ही स्थानों में, जीनों में, कोनों में पीक थूकते हैं? उत्सवों, मेलों, रेलों और खेलों में ठेलम-ठेल करते हैं, निमंत्रित होने पर विलंब से पहुँचते हैं या वचन देकर भी घर आने वालों को समय पर नहीं मिलते और इसी तरह शिष्ट व्यवहार के विपरीत आचरण करते हैं।

यदि आपका उत्तर 'हाँ' तो आप के द्वारा देश के सम्मान को भयंकर आघात और राष्ट्रीय संस्कृति को गहरी चोट पहुँच रही है।

यदि आपका उत्तर 'नहीं है', तो आपके द्वारा देश का सम्मान बढ़ेगा और संस्कृति रहेगी।

कन्हैया लाल मिश्र

© SCERT not to be republished